© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की प्रमुख समस्या एवं निदान

डॉ0 शाहेदा सिद्दीकी
प्रध्यापक समाजशास्त्र,

दीपिका गुप्ता
शोध छात्रा (समाजशास्त्र)
शा0–ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश : आज पिछड़े हुये अविकसित राष्ट्र विकासशील और विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आना चाहते हैं। प्रत्येक राष्ट्र योजनाबद्ध प्रयत्नों के द्वारा एक निश्चित अवधि में कुछ सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करना, अपनी समस्याओं से मुक्ति पाना एवं अभावों पर विजय पाना चाहता है। वर्तमान में हमारा देश आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्र की महाशक्ति बनता जा रहा है, लेकिन अनैतिकता, भ्रष्टाचार, शोषण, अपराध, हिंसा एवं हीनता बोध से हम आज भी नहीं मुक्त हो पा रहे हैं। श्रमिकों का श्रम एवं शोषण कहीं न कहीं इससे गहरे से सरोकार रखता है। वर्तमान में प्रत्येक श्रमिक इस समाज से वह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी है, जो अपनी सामर्थ्य और क्षमताओं के अनुसार समाज उसे दे सकता है। श्रमिकों को एक ऐसा वातावरण दिया जाना चाहिए, जिससे वे एक स्वतंत्र और गरिमामय जीवनयावन कर सकें। प्रस्तुत शोध पत्र में कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं का विश्लेषण करना हैं।

मुख्य शब्द : श्रमिक, सामाजिक लक्ष्य, अपराध हिंसा, योजनाबद्ध एवं सरोकार आदि।

भारतीय कालीन उद्योग देश एवं प्रदेश का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शत–प्रतिशत निर्यातपरक एवं श्रम–प्रधान असंगठित क्षेत्र का ग्रामीण उद्योग है। यह उद्योग पूर्वी उत्तर प्रदेश के अर्थतंत्र का मूल आधार माना जाता है। इस उद्योग से समाज के लाखों दलित व पिछड़े लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त होता है। देश के सम्पूर्ण कालीन उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत भाग उत्तर प्रदेश के भदोही जिले से होता हैं, जो कालीन उत्पादक क्षेत्र के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। विश्व के किसी भी हिस्से में बेची जाने वाली कालीनों में प्रत्येक पांचवा कालीन भदोही में निर्मित होता है। अपने सुन्दर कलात्मक स्वरूप, उत्तम गुणवत्ता तथा टिकाउपन आदि विशिष्टताओं के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भदोही नाम की एक अलग पहचान है।

इस कालीन उद्योग में क्षेत्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इस उद्योग के अन्तर्गत कार्यरत श्रमिकों को वर्तमान में कई स्वतंत्र समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण इस उद्योग का विकास कार्य प्रभावित हो रहा है।

श्रमिकों की समस्याएँ :

1. अशिक्षा : अधिकांश श्रमिकों की सबसे बड़ी समस्या अशिक्षा है। जिसके कारण वह अपने अधिकारों का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं, अशिक्षा के कारण ही शिक्षा तथा जानकारी के अभाव में इन श्रमिकों द्वारा कई लाभकारी योजना का लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। जो की श्रमिकों के आर्थिक सामाजिक जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में एक रूकावट है।[1] इस प्रकार सभी समस्याओं का एक मूल कारण अशिक्षा भी है।

2. प्रशिक्षण का अभाव : कालीन उद्योग में प्रशिक्षण के अभाव के कारण श्रमिक इस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। उनको कालीन की बुनाई हेतु एक विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता है। जिससे वे स्पष्ट एवं चित्रात्मक ढंग से कालीनों का निर्माण कर सके। क्योंकि इसी प्रदर्शन के आधार पर उनके पारिश्रमिक का निर्धारण होता है। यदि उनके श्रम की कीमत उनके मन माफिक नहीं उपलब्ध होता है तो वे मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो जाते हैं, जिसका उनके जीवन में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. आवास की समस्या : मानव की मूलभूत आवश्यकता होने के कारण आवास व्यवस्था का सीधा प्रभाव श्रमिकों की कार्यकुशलता पर पड़ता है। श्रमिक मानसिक व शारीरिक कार्य करने वाला व्यक्ति है तथा उसकी कार्यक्षमता को आवास व्यवस्था भी प्रभावित करती है। अधिकांशतः श्रमिकों का आवास स्थान अस्थाई व किराये के मकान हैं। मालिक द्वारा किसी प्रकार की आवास सुविधा नहीं दी जाती है, इन श्रमिकों को आवास के साथ–साथ बिजली, पानी जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

4. स्वास्थ्य संबंधी समस्या : स्वास्थ्य की श्रमिकों की कार्यकुशलता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिक अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। क्योंकि ऊँन के रेशे व बारीक कण श्रमिकों की श्वास नली द्वारा शरीर में तथा आँखों में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे दमा, टी0बी0, कैंसर, नेत्र रोग जैसी कई प्रकार की बीमारी से ग्रसित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इन बीमारियों से बचने के लिए श्रमिकों के लिए कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है, बीमारी से ग्रसित कई श्रमिक ऋण में डूब जाते हैं तथा शासन द्वारा भी इन उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के लिए उचित प्रावधान नहीं पाये गये हैं।

5. आय–व्यय : मनुष्य आर्थिक प्रयत्नों द्वारा जो आय प्राप्त करता है, उसका प्रधान लक्ष्य दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय करना होता है। कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की आय सीमित होती है किन्तु व्यय असीमित है। यहाँ पर कार्यरत श्रमिकों की आय बहुत कम है, जिसके कारण उन्हें अपनी सीमित आय में अनिवार्य आवश्यकताओं की वस्तु क्रय करने में भी कठिनाई का अनुभव होता है। अधिकांशतः श्रमिक हमेशा घाटे की स्थिति बने रहते हैं तथा उनके द्वारा किसी प्रकार की बचत नहीं हो पाती है। आर्थिक स्थिति अच्छी व संतोषप्रद नहीं होने के कारण श्रमिक अपने जीवन स्तर को ऊँचा नहीं उठा पाते हैं।[2]

6. ऋण की समस्या : कालीन उद्योग में कार्यरत अधिकांश श्रमिकों को विवाह हेतु, बीमारी हेतु तथा कई सामाजिक रीति–रिवाजों आदि कार्यों के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। जिसकी पूर्ति के लिए श्रमिक द्वारा ऋण के रूप में धन प्राप्त किया जाता है। शोध के दौरान पाया गया की ऋण प्राप्त करने के लिए श्रमिकों के सामने मुख्य समस्या होती है, ऊँची ब्याज दर का होना है, जिसका भुगतान करना कभी–कभी श्रमिकों के लिए संभव नहीं हो पाता है। ऋण के कारण श्रमिक कर्ज में डूबता जाता है। जिससे श्रमिक अपने आर्थिक जीवन स्तर को ऊँचा नहीं उठा पाते हैं।

7. महिला श्रमिकों की समस्या : स्त्री–पुरुष आदिकाल से एक दूसरे के पूरक के रूप में चले आ रहे हैं, दोनों एक–दूसरे के अभाव में अपूर्ण है। पुरुष–स्वभाव व शरीर से कठोर कार्य में सक्षम होता है और स्त्री सरल व सुकोमल कार्यों के लिए, लेकिन यहाँ पर महिलाएँ अधिक कार्य प्राप्त करने के लिए कठिन से कठिन कार्य करती है। जिसका उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। महिला श्रमिकों की अपनी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण गर्भावस्था में अपने खान–पान पर विशेष ध्यान नहीं रख पाती है, परिणाम स्वरूप उनकी संताने रोग्रस्त हो जाती है।

8. श्रम कल्याण का अभाव : वर्तमान समय में कई सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ उन आकस्मिक दुर्घटनाओं या कठिनाईयों से बचाने का प्रयास है, जिनकी संभावनाएँ मानव जीवन में बुनी रहती है। यह सामाजिक सुरक्षा सरकार या सामाजिक संगठनों द्वारा प्रदान की जाती है। कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का अभी भी इन योजनाओं द्वारा कोई उचित कल्याण नहीं पाया है।

9. मजदूरी की समस्या : उत्पादन के लिए मजदूरों को दिया जाने वाला पैसा मजदूरी कहलाता है। वास्तव में मजदूरी एक मौलिक विषय है जिसके चारों ओर लगभग अन्य श्रम समस्याएँ घूमती है। मजदूरी उद्योगपति के लिए लागत तथा मजदूर के लिए आय का साधन है। मजदूर की कुशलता काफी हद तक इस पर निर्भर करती है। कालीन उद्योग में मजदूरों को बहुत कम मजदूरी दी जाती है जिससे उनका गुजारा नहीं होता। वर्तमान में लगभग 90 प्रतिशत उद्योग शहरों में स्थित है और मजदूरों ने ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन किया है, जिससे सुखद जीवन व्यतीत करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि कम वेतन में वह गुजारा नहीं कर पाता। उसके पास आवास की सुविधा नहीं है और मजदूरों का बढ़ा हिस्सा मकान के लिए किराए देने में खर्च हो जाता है।

10. नेतृत्व की समस्या :

नेतृत्व का समाज की शक्ति संरचना में प्रमुख स्थान है, नेता ही राजनीतिक संगठनों और शक्ति संरचना को जीवन दिशा और प्रवाह प्रदान करते हैं। शक्ति की क्षमता का सदुपयोग और दुरुपयोग नेता की क्षमता व योग्यता पर निर्भर करता है। प्रत्येक समाज की शक्ति संरचना में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो लोगों को क्रिया करने के लिये प्रभावित करते हैं। ऐसी ही क्रिया को नेतृत्व कहा जाता है। नेतृत्व वह व्यवहार है जो दूसरे लोगों के व्यवहार को उससे कही अधिक प्रभावित करता है। जितना कि दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार नेता को प्रभावित करते हैं। श्रमिकों में नेतृत्व का अभाव एक राष्ट्रव्यापी समस्या है जिसके कारण श्रमिक आज भी दिशा हीन है। संगठन के अभाव का प्रमुख कारण उनमें राजनैतिक चेतना की कमी है।[3]

निदान :

1. शिक्षा पर बल देना : श्रमिकों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति सुदृढ़ न होने पाने में अशिक्षा एक बहुत बड़ी समस्या है, इस समस्या के समाधान हेतु कार्यरत श्रमिकों में शिक्षा के महत्व को जानना आवश्यक है, और इस कार्य में सरकार तथा समाज के अन्य वर्ग को भी इस ओर विशेष तौर पर ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि श्रमिक वर्ग भी समाज के अन्य वर्गों के बराबर आ सके।

2. प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना : जिले में प्रशिक्षण केन्द्रों के अभाव के कारण श्रमिकों को कालीन उद्योग में कई समस्याओं का सामना समय–समय पर करना पड़ता है, जिले में प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए साथ ही जिले में शिक्षित युवाओं व प्रशिक्षण दलों की सहायता करना चाहिए, ताकि लोगों को उचित रोजगार की उपलब्धि हो सके व श्रमिकों की कार्य कुशलता में वृद्धि हो सके।

3. उचित पारिश्रमिक की व्यवस्था : कालीन उद्योग में श्रमिकों को उचित पारिश्रमिक दिया जाये ताकि उनका जीवन स्तर उच्च हो और अधिक कार्य कर सके। अर्थात् श्रमिकों को उनके न्यूनतम जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उचित मजदूरी मिलना आवश्यक है।

4. उचित समय सीमा : श्रमिकों की कार्य क्षमता को बनायें रखने तथा उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उचित समय सीमा निर्धारित की जानी चाहिए ताकि श्रमिककार्य के साथ–साथ शारीरिक विश्राम भी पर्याप्त रूप से कर सके।

5. स्वास्थ्य व्यवस्था : शासन तथा उद्योग मालिक द्वारा श्रमिकों के लिए उचित स्वास्थ्य व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे उनकी बीमारी के उपचार के लिए मदद किया जा सके।

6. ऋण की व्यवस्था : कभी–कभी श्रमिकों को अपने ऋण से ज्यादा ब्याज दर का भुगतान करना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक दयनीय हो जाती है, अतः साहुकारों व ऋण दाताओं की ऋण की ब्याज दर को कम किया जाना चाहिए।

7. स्थायी रोजगार व्यवस्था : उद्योगों में श्रमिकों को स्थायी किया जाना चाहिए ताकि वे अपने रोजगार के प्रति निश्चित रहे। इससे उनकी कार्य के प्रति रूचि बढ़ेगी तथा वे कुशलता पूर्वक कार्य कर सकेंगे।[4]

8. प्राथमिक उपचार व्यवस्था : उद्योगों में आकस्मिक घटनाओं का डर श्रमिकों को हमेशा बना रहता है, जिसके लिए उद्योग में प्राथमिक उपचार की व्यवस्था हमेशा उपलब्ध होनी चाहिए ताकि कोई भी घटना–घटने पर उसी समय प्राथमिक उपचार किया जा सकें।

9. महिला श्रमिकों को महत्व : कालीन उद्योग में कार्यरत महिला श्रमिकों को भी पुरुषों के समान कार्य करना पड़ता है, अतः उद्योग में कार्यरत महिला श्रमिकों को उचित महत्व दिया जाना चाहिए तथा उनकी क्षमता के अनुसार ही काम लिया जाना चाहिए तथा उन्हें समय–समय पर उचित लाभ दिये जाने चाहिए व महिला श्रमिकों के लिये बनाये गये प्रावधानों को महत्व देना आवश्यक है।

10. श्रम संगठन की स्थापना : ''एकता में शक्ति है'' इस कहावत को चरितार्थ करने के लिये संगठन की बहुत आवश्यकता है ताकि वे अपनी उचित मांगों को पूरा करवाने में सफल हो सके और श्रमिकों और मालिकों के संबंध भी मधुर बने रहे कारखाना अधिनियम के तहत जिले की औद्योगिक ईकाइयों के संगठन में श्रमिकों को स्थान देना

चाहिए जिससे कि वे अपनी समस्याओं को प्रबधंकों के सामने रख सके तथा उन समस्याओं का समाधान किया जा सके।[5]

11. श्रम कल्याण की सुविधा : श्रमिकों को बीमा ऋण, प्राविडेंट फंड, यात्रा भत्ता, बोनस छुट्टी आदि की सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए जिससे श्रमिकों के जीवन स्तर व कार्य क्षमता में वृद्धि हो सकेगी।

12. सामाजिक समानता : कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का आय का निम्न स्तर होने से आर्थिक स्तर भी निम्न होता है। किन्तु इन श्रमिकों को भी समाज में समान स्तर दिया जाना आवश्यक है ताकि अन्य वर्ग की तरह ये भी अपना आर्थिक व सामाजिक विकास कर सके।

13. सरकारी प्रावधानों को महत्व : उद्योगों द्वारा सरकार की नीति व प्रावधानों को अपनाना चाहिए तथा सरकार द्वारा इन उद्योगों के विकास के लिए अपेक्षाकृत पूर्ण नीति बनाई जानी चाहिए।[6]

14. यातायात साधनों का विकास : कालीन उद्योग के विकास के लिए उचित सड़कों व परिवहन के साधनों का विस्तार किया जाना चाहिए।

15. विस्तृत सूचना की जानकारी : किसी भी उद्योगों अथवा श्रमिकों के विकास के लिए उन्हें विस्तृत सूचनाओं की जानकारी होना आवश्यक है ताकि औद्योगिक विकास को बढ़ाया जा सके व श्रमिकों को भी इसका लाभ प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष : कालीन उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं से सम्बन्धित चुनौतियाँ अभी भी जटिल है, जिसे हल किया जाना अभी शेष है, जब तक हम श्रमिकों को एक बदलते भारत के गतिशील हिस्से के रूप में नहीं देखेंगे तब तक ऐसी समस्याएँ जस की तस समाज में विद्यमान रहेंगी। आवश्यकता है कि इस पर और सख्त नियम बनाये जाएं जिससे समाज में श्रमिकों को एक ऐसा वातावरण उपलब्ध हो सके कि वे भी समाज में गरिमामय जीवन यापन कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1993), सामाजिक समस्याएँ, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई, पृ0 33
2. सक्सेना, आर0सी0 (1992), श्रम समस्याएँ समाज कल्याण एवं सुरक्षा, पृ0 48
3. अहूजा राम (2002) : सामाजिक समस्याएँ रावत पब्लिकशेन, कानपुर, पृ0 87
4. अग्निहोत्री, वी0डी0 (1955), लेबर बुलेटिन, पृ0 22
5. कुरुक्षेत्र, जनवरी 2017, भारत सरकार
6. www.wikipedia.com